

वर्तित वर्ष 2024 में भारत का दलहन आयात 6 वर्ष के उच्चतम स्तर पर

प्रलिस के लयि:

[दलहनी फसलें](#), ([PM-AASHA](#)), [नयुनतम समर्थन मूलय \(MSP\)](#), [भारतीय कृषि अनुसंधान परषिद \(ICAR\)](#), [हडिन हंगर](#)

मेन्स के लयि:

भारत के दलहन उत्पादन और आयात के वर्तमान रुझान, भारत के दलहन आयात से संबंधित मुद्दे और संबंधित सरकारी पहल ।

[स्रोत: इकोनॉमिक टाइम्स](#)

चर्चा में क्यों?

वर्तित वर्ष 2024 में भारत का दलहन आयात 84% बढ़कर छह वर्ष के उच्चतम स्तर पर पहुँच गया । इस उछाल का कारण देश में दलहनों का कम उत्पादन और लाल मसूर तथा पीली मटर पर आयात शुल्क माफ करने का सरकार का नरिणय है ।

भारत में दलहन की वर्तमान स्थिति क्या है?

- भारत में दलहन उत्पादन की स्थिति:
 - भारत विश्वभर में दलहन का सबसे बड़ा उत्पादक (वैश्विक उत्पादन का 25%), उपभोक्ता (विश्व खपत का 27%) और आयातक (14%) है ।
 - खाद्यान्न क्षेत्र में दलहन की हसिसेदारी लगभग 20% है और देश के कुल खाद्यान्न उत्पादन में इसका योगदान लगभग 7% -10% है ।
 - मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और कर्नाटक शीर्ष पाँच दलहन उत्पादक राज्य हैं ।

The production of pulses during the last three years and in 2022-23 (as per third advance estimates) are given as under:

Year	Production (Lakh Tonnes)
2019-20	230.25
2020-21	254.63
2021-22	273.02
2022-23*	275.04

* As per third advance estimates

//

- दलहन आयात में भारत की स्थिति:
 - भारत ने वृत्तीय वर्ष 2023-24 में 4.65 मिलियन मीट्रिक टन दलहन का आयात किया (वर्ष 2022-23 में 2.53 मिलियन टन से

अधिक), जो वर्ष 2018-19 के बाद सबसे अधिक है।

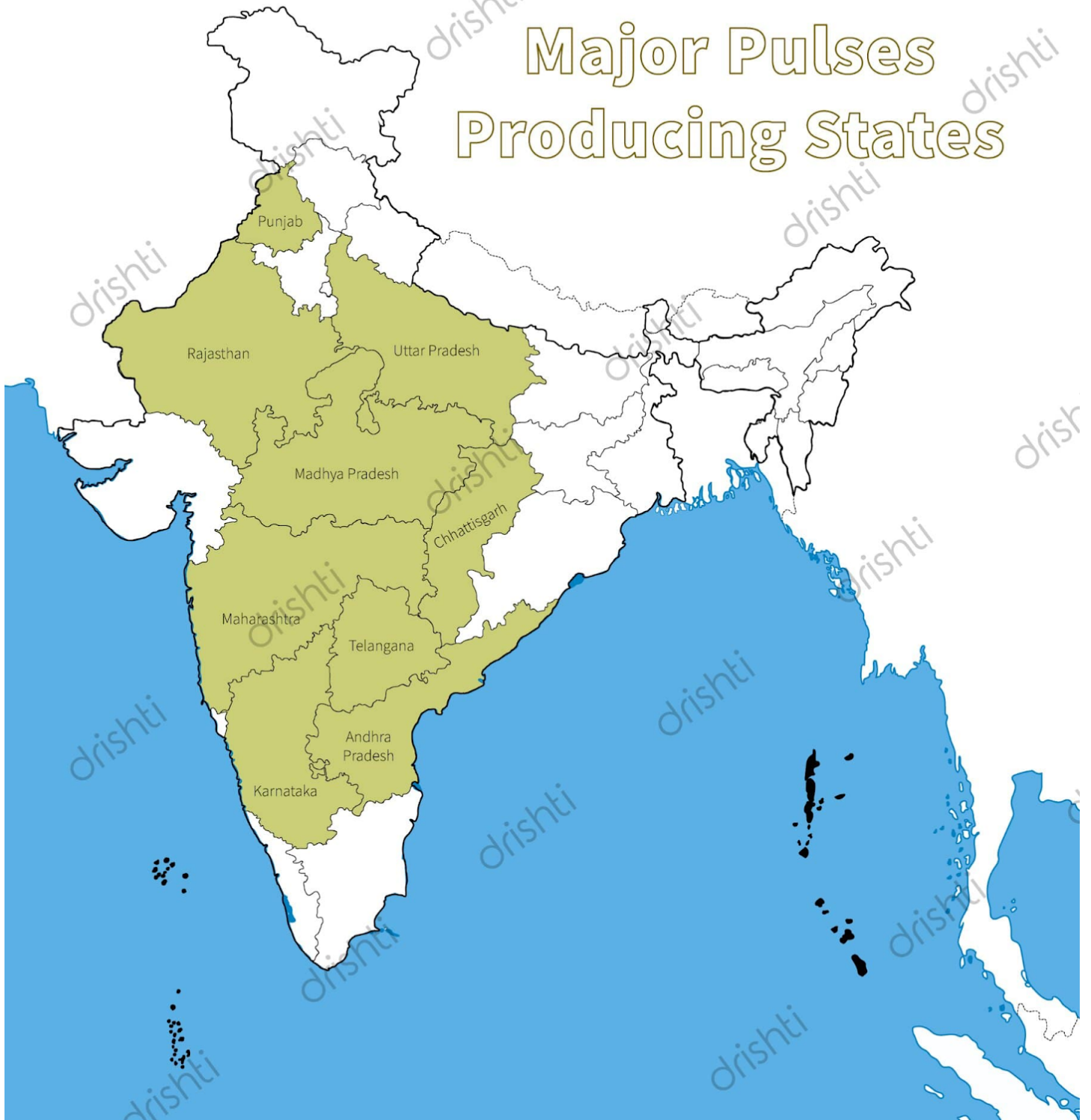
- मूल्य के संदर्भ में दलहन का आयात 93% बढ़कर 3.75 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया है।
- विशेष रूप से कनाडा से लाल मसूर का आयात दोगुना होकर यह 1.2 मिलियन टन हो गया।
- दिसंबर के बाद से शुल्क-मुक्त आयात के कारण रूस और तुर्किये से पीली मटर के आयात में वृद्धि दर्ज की गई है।
- भारत सहित दक्षिण एशियाई देश आमतौर पर **कनाडा, म्यांमार, ऑस्ट्रेलिया, मोजाम्बिक और तंज़ानिया** से दलहन का आयात करता है।

■ दलहन:

- **आवश्यक तापमान:** 20-27°C के बीच
- **आवश्यक वर्षा:** लगभग 25-60 सेमी.
- **मृदा का प्रकार:** बलुई-दोमट मृदा
- शाकाहारी भोजन में ये प्रोटीन के प्रमुख स्रोत हैं।
- **दलहनी फसलें होने के कारण** अरहर को छोड़कर ये सभी फसलें वायु में मौजूद नाइट्रोजन को अवशोषित करके मृदा की उर्वरता बनाए रखने में सहायता करती हैं। इसलिये **इन्हें अधिकतर अन्य फसलों के साथ चक्रानुक्रम में उगाया जाता है।**
- **दलहन की कृषि वर्ष भर की जाती है।**
- **रबी दालें (60% से अधिक योगदान):** चना, बंगाली चना, मसूर, अरहर।
 - **रबी फसलों को बुआई के दौरान हल्की ठंडी जलवायु की आवश्यकता होती है**, वनस्पति से लेकर फली बनने तक ठंडी जलवायु और परपिक्वता/कटाई के दौरान गर्म जलवायु की आवश्यकता होती है।
- **खरीफ दालें:** मूँग (हरा चना), उड़द (काला चना), तूर (अरहर दाल)।
 - खरीफ **दलहनी फसलों** को बुआई से लेकर कटाई तक गर्म जलवायु की आवश्यकता होती है।



Major Pulses Producing States



भारत में दलहन उत्पादन को बढ़ावा देने के लिये क्या पहलें की गई हैं?

■ दलहन पर राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मशिन (NFSM):

- कृषि एवं कृषि कल्याण विभाग के नेतृत्व में NFSM-दलहन पहल, जम्मू-कश्मीर और लद्दाख सहित 28 राज्यों तथा 2 केंद्रशासित प्रदेशों में संचालित है।

○ NFSM-दलहन के तहत प्रमुख हस्तकषेप:

- विभिन्न हस्तकषेपों के लिये राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों के माध्यम से **किसानों को सहायता**।
- फसल प्रणाली का प्रमाणन (Cropping System Demonstrations)
- बीज उत्पादन और **HYV/संकर** का वितरण।
- इसके अतिरिक्त दलहन के लिये **150 बीज केंद्रों** की स्थापना ने गुणवत्तापूर्ण दलहन बीजों की उपलब्धता बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

■ प्रधानमंत्री अनुरोधित आय संरक्षण अभियान (पीएम-आशा) योजना:

- इस व्यापक अम्बरेला योजना (वर्ष 2018 में लॉन्च) में तीन घटक शामिल हैं:
 - **मूल्य समर्थन योजना (PSS):** इस योजना के तहत **न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP)** पर पूर्व-पंजीकृत किसानों से खरीद की जाती है।
 - **मूल्य कमी भुगतान योजना (PDPS):** इस योजना के तहत मूल्य अंतर के लिये किसानों को मुआवज़ा प्रदान किया जाता है।
 - **नजि खरीद सर्टिफिकेट योजना (PPSS):** यह योजना खरीद में नजि क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित करती है।

■ अनुसंधान एवं विविधता के विकास में ICAR की भूमिका:

- **भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR)** अनुसंधान और विकास प्रयासों के माध्यम से दलहनी फसलों की उत्पादकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ICAR नमिनलखिति पर ध्यान केंद्रित करती है:
 - **दालों पर बुनियादी और रणनीतिक अनुसंधान।**
 - **राज्य कृषि विश्वविद्यालयों** के साथ सहयोगात्मक अनुप्रयुक्त अनुसंधान।
 - **स्थान-वशिष्ट उच्च उपज वाली कसिमों** और उत्पादन पैकेज का विकास।
 - वर्ष 2014 से वर्ष 2023 की अवधि के दौरान देश भर में व्यावसायिक खेती के लिये दालों की प्रभावशाली **उच्च उपज वाली कसिमों** और संकर बीज को आधिकारिक तौर पर मान्यता प्रदान की गई है।

दलहन आयात पर भारत की निर्भरता के पीछे क्या कारण हैं?

■ फसल पद्धति में बदलाव:

- परंपरागत रूप से भारत में किसान दलहन के साथ फसल चक्र अपनाते हैं। हालाँकि विगत दशकों में नमिनलखिति कारणों से चावल तथा गेहूँ जैसी **जल-गहन फसलों** की खेती में बदलाव आया है।
 - चावल तथा गेहूँ मुख्य भारतीय खाद्यान्न हैं, जिनकी खपत एवं मांग में वृद्धि हुई है।
 - **MSP** में उत्पादन की औसत लागत पर उच्च लाभ के साथ वशिष्ट वस्तुओं की गारंटीकृत खरीद सरकारी प्रोत्साहन के उदाहरण हैं।
 - कुछ क्षेत्रों में बेहतर सचिाई सुविधाओं की उपलब्धता।

■ कम लाभप्रदता:

- खाद्यान्नों की तुलना में दलहन प्रायः **प्रति हेक्टेयर कम लाभ प्रदान करती** हैं जो किसानों को इनके उत्पादन को लेकर हतोत्साहित करता है, वशिषकर उपजाऊ एवं सचिति भूमि पर।

■ जलवायु चुनौतियाँ:

- **अनियमित वर्षा एवं सूखा** दलहन उत्पादन पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं, जो आमतौर पर वर्षा आधारित फसलें हैं।

■ सीमिति तकनीकी प्रगति:

- खाद्यान्न एवं नकदी फसलों की तुलना में दलहनों में अनुसंधान एवं विकास तथा रोगों एवं कीटों के प्रति संवेदनशीलता अधिक होती है।

दलहन के मामले में भारत की आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करने के क्या उपाय हैं?

■ घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देना:

- दलहनों के लिये न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) प्रदान करना जो चावल तथा गेहूँ जैसी अन्य फसलों के प्रतिप्रतिस्पर्धी होती है।

- बीज, उर्वरक एवं दलहनों के लिये वशिष्ट अन्य कृषिआदानों हेतु सबसिडी प्रदान करना।
- मौसम के उतार-चढ़ाव से जुड़े जोखिमों को कम करने के लिये **फसल बीमा योजनाएँ** लागू करना।

■ फसल चक्र को बढ़ावा देना:

- मृदा स्वास्थ्य एवं सतत कृषि हेतु फसल चक्र के दीर्घकालिक लाभों पर प्रकाश डालते हुए किसानों को दलहनों को अपनी फसल प्रणाली में पुनः शामिल करने के लिये प्रोत्साहित करना।

■ अधिक उपज देने वाली प्रजातियाँ विकसित करना:

- विभिन्न क्षेत्रीय परिस्थितियों के अनुकूल **सूखा प्रतिरोधी, अधिक उपज देने वाली दलहन कसिमों** के अनुसंधान एवं विकास में निवेश करना।

- किसानों को प्रशिक्षण एवं वसतिार कार्यक्रमों के माध्यम से इन उन्नत कस्मों को अपनाने के लिये प्रोत्साहति करना ।
- सचिाई अवसंरचना में सुधार:
 - दलहन की कृषा हेतु उपयुक्त क्षेत्रों, वशिषकर सूखाग्रसूत क्षेत्रों में सचिाई सुवधिाओं का वसतिार करना ।
 - जल संरक्षण के लिये ड्रपि सचिाई जैसी जल-कुशल सचिाई तकनीकों को बढावा देना ।
- कीमतों में उतार-चढाव को कम करना:
 - फसल कटाई के बाद होने वाली हानाको कम करने और साथ हीपूरे वर्ष मूल्य स्थरिता सुनशिचति करने हेतु दलहनों की भंडारण सुवधिाओं में सुधार करना ।
 - सुव्यवस्थति आपूर्ति शृंखला परबंधन: परविहन लागत को कम करने एवं बचौलयिों द्वारा मूल्य में हेर-फेर को कम करने के लिये आपूर्ति शृंखला की दक्षता में वृद्धि करना ।
- वैकल्पकि प्रोटीन स्रोतों को बढावा देना:
 - दाल, कदन्न और साथ ही अंडे जैसे प्रोटीन युक्त वकिल्पों की खपत को बढावा देकर आहार वविधिीकरण (हडिन हंगर को समाप्त करना) को प्रोत्साहति करना ।

NAFED क्या है?

- भारतीय राष्ट्रीय कृषा सहकारी वपिणन महासंघ लमिटिड की स्थापना 2 अक्तूबर, 1958 को गांधी जयंती के शुभ अवसर पर की गई थी ।
- यह बहु-राज्य सहकारी सोसायटी अधनियम के तहत पंजीकृत है ।
- यह भारत में कृषा उपज के वपिणन हेतु सहकारी समतियिों का एक शीर्ष संगठन है ।
- यह वर्तमान में प्याज़, दालें एवं तलिहन जैसे कृषा उत्पादों के सबसे बड़े खरीदारों में से एक है ।

दृषटि मुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. दलहन के आयात पर भारत की नरिभरता के संबंध में वर्तमान स्थतिपर प्रकाश डालयि । दलहन उत्पादन में भारत की आत्मनरिभरता से संबंधति चुनौतियिों एवं संभावति समाधानों पर चर्चा कीजयि ।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

[[[?]]]?

प्रश्न. भारत में दालों के उत्पादन के संदरभ में नमिनलखति कथनों पर वचिार कीजयि: (2020)

1. उड़द की खेती खरीफ और रबी दोनों फसलों में की जा सकती है ।
2. कुल दाल उत्पादन का लगभग आधा भाग केवल मूंग का होता है ।
3. पछिले तीन दशकों में जहाँ खरीफ दालों का उत्पादन बढा है, वहीं रबी दालों का उत्पादन घटा है ।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 2
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a)

[[[?]]]?

प्रश्न. जल इंजीनयिरी और कृषा-वजिज्ञान के क्षेत्रों में क्रमशः सर एम. वशिवेश्वरैया और डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन के योगदानों से भारत को कसि प्रकार लाभ पहुँचा था? (2019)

प्रश्न. भारत में स्वतंत्रता के बाद कृषा में आई वभिन्न प्रकारों की क्रांतियिों को स्पष्ट कीजयि । इन क्रांतियिों ने भारत में गरीबी उन्मूलन और खादय सुरक्षा में कसि प्रकार सहायता प्रदान की है? (2017)

